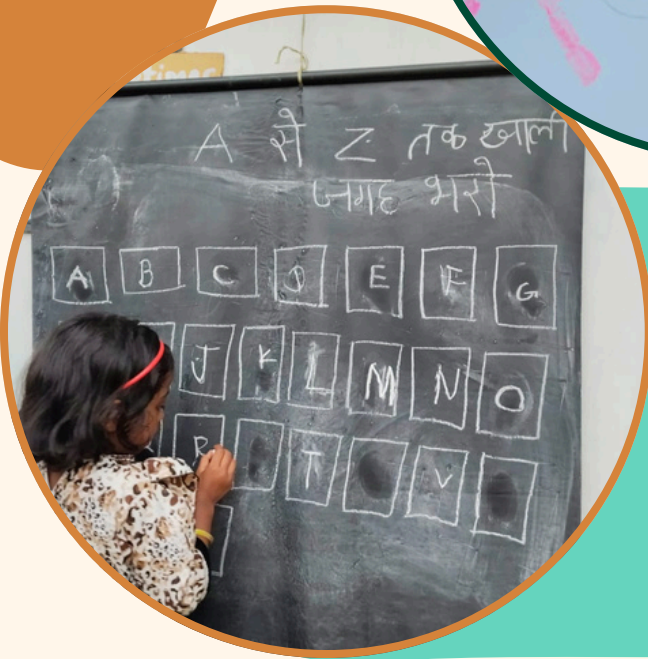




हमर सृजन शाला

चिन्हारी फाउंडेशन

मार्च 2025



प्रकरण



संपादक की कलम से

कविता

हमर सृजन शाला -
सामूहिक अनुभव

कविता, केशवती, पूजा, रेणुका,
थानेश।

Nurturing dream
preserving roots

sumit verma

Home of creativity -
A New Space - Anup
Aditi

संपादक की कलम से:

कविता

इस बार हम आपको कुछ ऐसी कहानियाँ साझा करना चाहते हैं, जिनके माध्यम से आप हमें और हमारे प्रयासों को बेहतर समझ पाएँगे। यह कहानियाँ न केवल हमारे कार्यों का प्रतिबिंब हैं, बल्कि उन सपनों और संघर्षों की झलक भी हैं, जो हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। इन कहानियों को आप तक पहुँचाने में हमें अपार हर्ष हो रहा है। तो आइए, हमारे सफर के इन नए अनुभवों की ओर चलते हैं।

शिक्षा केवल कक्षाओं तक सीमित नहीं है; यह एक सतत प्रक्रिया है, जो बच्चों के संपूर्ण विकास का आधार बनती है। वास्तविक अर्थों में शिक्षा तब सफल होती है जब वह बच्चों में आत्मविश्वास, जिज्ञासा, और समाज के प्रति संवेदनशीलता विकसित कर सके। चिन्हारी का उद्देश्य केवल पठन-पाठन को बढ़ावा देना नहीं है, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में मौजूद असमानताओं को दूर कर एक समावेशी और समतामूलक वातावरण का निर्माण करना है। साथ ही आंगनबाड़ी और सरकारी स्कूलों में शिक्षा की प्रक्रिया में मौजूद अंतराल को भरना है, ताकि प्रत्येक बच्चा समान अवसरों के साथ सीख सके और आगे बढ़ सके।

हमारी विचारधारा संस्कृति, लैंगिक समानता, समान अवसर, पर्यावरण और आलोचनात्मक सोच पर आधारित है। इसी दिशा में, प्रशिक्षुओं को बाल पोषण, मनोविज्ञान, बाल विकास, समुदाय के साथ कार्य करने और छोटे बच्चों को पढ़ाने की प्रभावी तकनीक सीखने का अवसर दिया जाता है।



प्रशिक्षण के एक महत्वपूर्ण भाग के रूप में, हम बोधशाला (एक संस्था है राजस्थान में <https://bodhindia.org/our-programmes/sustaining-community-schools-bodhshalas/>) का दौरा भी करते हैं, जहाँ हम व्यावहारिक शिक्षण का अनुभव प्राप्त करते हैं।



पाठ योजना और शैक्षिक संसाधनों की तैयारी का अभ्यास, गाँवों में समुदाय के साथ समय समय पर बातचीत का आयोजन, शिक्षण अनुभव और इससे जुड़ी चुनौतियाँ—ये सभी पहलू प्रशिक्षुओं को वास्तविक परिस्थितियों में कार्य करने के लिए तैयार करते हैं। हमारा प्रयास है कि शिक्षा को अधिक समावेशी, प्रभावी और प्रेरणादायक बनाया जाए, जिससे बच्चों को सीखने का एक आनंददायक वातावरण मिल सके।

हमर सृजन शाला

सामूहिक अनुभव

Vision

हमर सृजन शाला (चिन्हारी) का उद्देश्य आंगनवाड़ी और सरकारी स्कूलों में सीखने की प्रक्रिया में मौजूद अंतराल को दूर करना है। यह प्रयास बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा को अधिक प्रभावी, समावेशी और अर्थपूर्ण बनाने की दिशा में काम करता है।

सरकारी स्कूलों और आंगनवाड़ी केंद्रों में कई चुनौतियाँ होती हैं, जैसे कि—

- बच्चों के सीखने के स्तर में असमानता
- शिक्षकों के लिए संसाधनों और प्रशिक्षण की कमी
- पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों में रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच का अभाव
- समुदाय और स्कूल के बीच सीमित सहभागिता

चिन्हारी इन चुनौतियों को समझते हुए एक ऐसा वातावरण बनाने की कोशिश करता है, जहाँ बच्चों को उनके सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके।



Philosophy

हमर सृजन शाला (चिन्हारी) का शैक्षिक दृष्टिकोण कुछ प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित है—

संस्कृति (Culture):

शिक्षा को बच्चों की स्थानीय भाषा, परंपराओं और सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ना आवश्यक है। इससे बच्चे अपने परिवेश से जुड़ाव महसूस करते हैं और सीखने की प्रक्रिया अधिक स्वाभाविक और रोचक बनती है। पाठ्यक्रम में लोककथाएँ, पारंपरिक खेल, और स्थानीय कहानियों को शामिल करने से बच्चे अपनी जड़ों से जुड़े रहते हैं और सीखने में रुचि लेते हैं।

2. लिंग समानता (Gender Equality):

शिक्षा प्रणाली में लैंगिक भेदभाव को खत्म करना आवश्यक है। अक्सर लड़कियों की शिक्षा को कम प्राथमिकता दी जाती है, या पाठ्यक्रम में रूढ़िवादी लिंग भूमिकाएँ दिखाई जाती हैं। चिन्हारी ऐसे पाठ्यक्रम और गतिविधियों को बढ़ावा देता है जो लड़कियों और लड़कों को समान अवसर देते हैं और पारंपरिक भेदभाव को चुनौती देते हैं।

3. न्यायसंगत अवसर (Equitable Opportunity):

सभी बच्चों को समान अवसर मिलें—चाहे वे किसी भी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हों। ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी और सामाजिक भेदभाव बच्चों की शिक्षा को प्रभावित करते हैं। चिन्हारी ऐसे शिक्षण पद्धतियों और कार्यक्रमों को अपनाता है, जो हर बच्चे की व्यक्तिगत ज़रूरतों को ध्यान में रखते हैं।

4. पर्यावरण से जुड़ाव (Environment):

बच्चों को प्राकृतिक पर्यावरण से जोड़कर सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। सीखने को सिर्फ किताबों तक सीमित न रखकर, बच्चों को उनके आसपास की प्रकृति, मिट्टी, पेड़-पौधे और मौसम के बदलावों से जोड़ना ज़रूरी है। यह दृष्टिकोण बच्चों में जिज्ञासा और संवेदनशीलता विकसित करता है।

5. आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking):

सिर्फ रटने की बजाय, बच्चों में सोचने, प्रश्न करने और समस्याओं को हल करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। इससे वे सिर्फ परीक्षा पास करने के लिए नहीं, बल्कि जीवन की जटिलताओं को समझने और उनका समाधान खोजने के लिए सीखते हैं।

Reasons for Opening a Preschool

जनवरी के महीने में हमने प्री-स्कूल खोलने का निर्णय लिया, और इसके लिए तैयारी 1 जनवरी से ही शुरू कर दी थी। इससे पहले हम टीचर ट्रेनिंग भी शुरू कर चुके थे, ताकि बच्चों के लिए सबसे बेहतर शिक्षा का वातावरण तैयार किया जा सके। प्री-स्कूल के लिए हमने एक संपूर्ण पाठ्यक्रम (curriculum) तैयार किया, जिसके आधार पर बच्चों के लिए पाठ योजनाएं (lesson plans) बनाईं। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान, मैंने बच्चों को बेहतर तरीके से जानने और उनके व्यवहार को समझने का मौका पाया।

हम "चिन्हारी" की सभी लड़कियों ने मिलकर बच्चों के लिए कई शैक्षिक सामग्रियां तैयार कीं, जैसे फ्लैश कार्ड्स, नंबर कार्ड्स और अन्य सामग्री, जो बच्चों की पढ़ाई की आवश्यकताओं के अनुसार बनाई गई थीं। इसके बाद, 14 जनवरी को हमने मारदापोटी गांव में और 15 जनवरी को डोकाल गांव में अपना स्कूल खोला। इस अवसर पर, हमने ग्रामीणों को प्री-स्कूल खोलने का कारण बताया और "चिन्हारी" के माध्यम से जो हमने सीखा, उसका अनुभव साझा किया।

हमारे प्री-स्कूल को खोलने का मुख्य उद्देश्य था बच्चों को सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यावहारिक, औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करना। हम चाहते थे कि बच्चों को केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं, बल्कि गांव की रीति-रिवाज, संस्कृति और परंपराओं से भी जोड़ा जाए। इस दौरान, हमने गांववालों के सामने अपनी बात रखी, जिससे उन्हें हमारी कार्यप्रणाली और उद्देश्य की समझ मिली और वे हमारा प्रोत्साहन बढ़ाने के लिए प्रेरित हुए। यह हमारे लिए एक बहुत बड़ी सफलता थी।



- इसके साथ ही, हमने बच्चों को पढ़ाना भी शुरू किया। इस अनुभव में, मैं बच्चों को पढ़ाते हुए खुद भी बहुत कुछ सीख रही हूं। हम बच्चों को विभिन्न गतिविधियों (activities) के माध्यम से पढ़ाने की कोशिश करते हैं, ताकि उनका मन लगा रहे और वे सीखने में रुचि रखें। हम रोज़ नए और मजेदार तरीकों से उन्हें पढ़ाते हैं, ताकि उनका ध्यान बने रहे। बच्चे भी मस्ती करते हुए पढ़ाई करते हैं, और हम भी उन्हें मजे के साथ पढ़ाते हैं। इस पूरे अनुभव में मुझे बहुत खुशी हुई, क्योंकि बच्चों को पढ़ाते हुए मैंने न सिर्फ उनका विकास देखा, बल्कि खुद का भी बहुत कुछ सीखा।
- हमारा उद्देश्य केवल शिक्षा देना नहीं है, बल्कि बच्चों के समग्र विकास के लिए उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन देना है, ताकि वे एक स्वस्थ, खुशहाल और जानकार जीवन जी सकें।



Preparation

Training

प्री-स्कूल बच्चों की ट्रेनिंग बच्चों के समग्र विकास के लिए बहुत जरूरी है। इसमें बच्चों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के लिए अलग-अलग टॉपिक्स पर ध्यान दिया गया है, जैसे:

1. चाइल्ड न्यूट्रीशन (Child Nutrition):

बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए सही आहार बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चों को संतुलित आहार जैसे प्रोटीन, विटामिन, मिनरल्स और कार्बोहाइड्रेट्स की आवश्यकता होती है। इसपर चर्चा करने के लिए हम बच्चों के माता-पिता के साथ सेशन आयोजित करेंगे, ताकि वे अपने बच्चों को सही न्यूट्रीशन दे सकें।

2. साइकोलॉजी (Psychology):

बच्चों का मानसिक विकास बहुत जरूरी है, क्योंकि इस उम्र में उनकी सोच और व्यवहार में बदलाव आते हैं। बच्चों को समझने और उनके मानसिक विकास को पहचानने के लिए उनके विचारों और कार्यों को समझना जरूरी है।

3. चाइल्ड डेवलपमेंट (Child Development):

बच्चों का शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक विकास इस उम्र में तेज़ी से होता है। बच्चों को खेल, कला, संगीत, और शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से प्रोत्साहित करना जरूरी है, ताकि उनका दिमाग सक्रिय रहे।

4. वर्किंग विथ द कम्युनिटी (Working with the Community):

बच्चों का विकास सिर्फ स्कूल तक सीमित नहीं है, बल्कि उनका परिवार और समुदाय भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए, हम अभिभावकों को बच्चों के विकास के बारे में जागरूक करने के लिए समुदाय के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

5. लर्निंग हाऊ टू टीच यंग चिल्ड्रन (Learning How to Teach Young Children):

हम बच्चों को उनकी उम्र और विकास के अनुसार शिक्षा दे रहे हैं। बच्चों के लिए खेल-खेल में शिक्षा देना, चित्र, संगीत और शारीरिक गतिविधियों का उपयोग करना, और उन्हें बाहरी दुनिया से जोड़ना जरूरी है।

6. लर्निंग एंड चैलेंजेस (Learning and Challenges):

बच्चों को सिखाने में कई चुनौतियाँ आती हैं जैसे ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई, अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में समस्या, और समूह में काम करने में कठिनाई। बच्चों की सीखने की गति अलग-अलग होती है, जिससे हमें लचीले तरीके से उनकी मदद करनी पड़ती है।

Curriculum & Time table

प्री-स्कूल के बच्चों के लिए एक उपयुक्त करिकुलम तैयार करना जरूरी है, जिसमें मौसम, त्यौहार और उत्सवों को ध्यान में रखा गया हो। इससे बच्चों को उनके परिवेश, संस्कृति और समाज के बारे में जानने का मौका मिलता है। कुछ प्रमुख योजनाएँ:

करिकुलम की योजना:

बच्चों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास के लिए खेल, कला, संगीत, नंबरर्स, और हिंदी-इंग्लिश जैसी गतिविधियाँ शामिल की जाती हैं।

सांसारिक गतिविधियाँ:

बच्चों को मौसम और ऋतुओं के प्रभावों को समझने के लिए प्रकृति से जुड़ी गतिविधियाँ की जाती हैं।

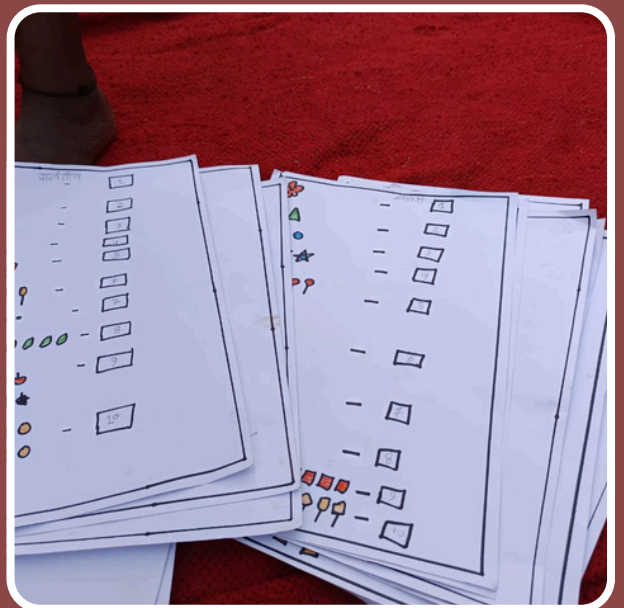
टाइमटेबल की योजना:

प्री-स्कूल में कक्षा समय 3 घंटे का होता है। छोटे समय सत्रों में शैक्षिक, खेल, और सांस्कृतिक गतिविधियाँ की जाती हैं।

मौसम और ऋतुएं (Seasons and Festivals):

बच्चों को मौसम और ऋतुओं के बारे में जानकारी दी जाती है, जैसे ग्रीष्मकाल में पानी पीने के तरीके, सर्दी में गर्म कपड़े पहनना और वर्षा ऋतु में सुरक्षित रहना।

त्योहारों के दौरान सांस्कृतिक गतिविधियाँ जैसे रंगोली बनाना, होली खेलना, दीपावली में सजावट करना आदि की जाती हैं। यह बच्चों को संस्कृति और विविधता के बारे में सिखाने का एक अच्छा तरीका है।



Resources

हमने बच्चों को शिक्षा देने और उनकी रुचि बढ़ाने के लिए फ्लैश कार्ड और खिलौनों का उपयोग किया। आसपास की चीजों से मिलकर फ्लैश कार्ड और स्टोरीबुक तैयार कीं, ताकि वे कहानियों के माध्यम से सीखें और मिल-जुलकर रहना समझें।

बच्चे अपने परिवार, शरीर और संवेदी अंगों को पहचान सकें, इसके लिए गिनती, परिवार का चित्र, शरीर के अंगों की पहचान जैसे फ्लैश कार्ड बनाए। हमने गाने, नाटक और गतिविधियों के ज़रिए बच्चों को सीखने में मदद की।

हमारी सीख (Learning):

फ्लैश कार्ड बनाना सीखा।

खुद कहानियाँ लिखना सीखा।

प्रिंट निकालना और लैमिनेशन करना सीखा।

बच्चों की रुचि और सोच को समझना सीखा।

खेल और खिलौनों के माध्यम से शिक्षा देने के तरीके अपनाए।



Events

इस महीने का अनुभव मेरे लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण और सीखने वाला रहा। 14 और 15 जनवरी को हमने दो गांवों में प्री-स्कूल का आयोजन किया, जहां हम "चिन्हारी साथी" के रूप में अपने अनुभव, यात्रा और कार्य को साझा करने के लिए उपस्थित थे। यह आयोजन न केवल हमारे लिए, बल्कि बच्चों और उनके परिवारों के लिए भी एक प्रेरणा का स्रोत बना।

कार्यक्रम की शुरुआत में, हमने वैष्णव जन का गीत प्रस्तुत किया, जिसका उद्देश्य हमारे उद्देश्य और कार्य की गहराई को गांववासियों तक पहुँचाना था। इस गीत के माध्यम से हम यह संदेश देना चाहते थे कि हमारा कार्य केवल शिक्षा से जुड़ा नहीं है, बल्कि यह समाज में अच्छे बदलाव की दिशा में भी एक कदम है।

कार्यक्रम में हमने अपने अनुभवों को साझा किया, जिनमें हमने अपनी यात्रा, चुनौतियाँ और सफलता की कहानियाँ बताईं। इस दौरान, हमने बताया कि कैसे हम लोगों से संवाद स्थापित करने में सफल हुए और किस तरह हमने अपने आत्मविश्वास को मजबूत किया। सबसे अहम बात यह थी कि हम यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि जो कठिनाइयाँ हमने झेली हैं, वे भविष्य में इन बच्चों को न झेलनी पड़ें।

इस आयोजन में गांव के पालक और प्रमुख लोग भी शामिल हुए, ताकि वे हमारे कार्य की सराहना कर सकें और इस प्रयास में अपना योगदान देने के लिए प्रेरित हो सकें। बच्चों के भविष्य के लिए पालकों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करना इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी उपलब्धि रही।

महीने के दौरान, हमने लोगों से जुड़ने पर भी बहुत जोर दिया। इस कार्यक्रम के माध्यम से, हमने बच्चों के माता-पिता और अन्य समुदाय के सदस्यों को यह समझाने की कोशिश की कि शिक्षा केवल ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बच्चों के आत्मविश्वास, व्यवहार और जीवन कौशल को भी आकार देती है।

हमारे और बच्चों के बीच एक ऐसा रिश्ता बन गया है, जिसमें वे अब खुलकर अपनी समस्याएँ, विचार और अनुभव साझा करते हैं। यह बच्चों की प्रगति का एक स्पष्ट संकेत है। इस प्रकार, इस महीने का यह आयोजन न केवल हमारे लिए, बल्कि बच्चों और उनके परिवारों के लिए भी एक बहुत महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ है।

निष्कर्ष:

इस कार्यक्रम ने हमें यह सिखाया कि शिक्षा के केवल पाठ्यक्रम नहीं होते, बल्कि शिक्षा का वास्तविक प्रभाव तब होता है जब हम बच्चों और समुदाय के बीच विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देते हैं। आने वाले समय में, हम इसी तरह के और कार्यक्रम आयोजित करेंगे, ताकि बच्चों के विकास में हर पहलु पर ध्यान दिया जा सके और उनके भविष्य को और भी उज्ज्वल बनाया जा सके।

Teaching experience

प्री-स्कूल बच्चों को पढ़ाने का अनुभव बहुत ही मजेदार, प्रेरणादायक और चुनौतीपूर्ण होता है। इस उम्र के बच्चों के साथ काम करके मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। उनके सरल सवाल, मासूमियत और नई चीजें सीखने की चाहत ने मुझे यह समझने का मौका दिया कि शिक्षा सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं होती, बल्कि बच्चों के अनुभवों से भी जुड़ी होती है।

खुद का अनुभव (Personal Experience)

बच्चों को पढ़ाना हमेशा एक मनोरंजक और प्रेरणादायक अनुभव होता है। हर दिन कुछ नया सीखने को मिलता है। बच्चों को नए-नए concepts और ज्ञान देना मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस अनुभव में बच्चों के साथ काम करते हुए मैंने कई बातें सीखी, जैसे:

धैर्य: छोटे बच्चों को समझाना थोड़ा मुश्किल होता है क्योंकि उनकी समझ सीमित होती है। इसलिए मुझे धैर्य और सहनशीलता दिखानी पड़ती है।

खुशी: बच्चों को पढ़ाते समय यह देखना अच्छा लगता है कि वे मेहनत से कुछ नया सीख रहे हैं। बच्चों को खुश देखकर मुझे भी बहुत खुशी होती है।

सीखने की निरंतरता: बच्चों के साथ काम करते हुए एहसास हुआ कि हर बच्चा अलग होता है। कुछ जल्दी सीखते हैं, जबकि कुछ को अधिक समय लगता है। हमें पढ़ाने के तरीके में लचीलापन रखना पड़ता है।

बच्चों को बुलाने का अनुभव (Experience of Calling Children)

बच्चों को व्यक्तिगत रूप से बुलाकर उनसे जुड़ना, उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने का एक अच्छा तरीका है। जब मैंने बच्चों को नाम से बुलाया, तो उन्होंने महसूस किया कि वे कक्षा में महत्वपूर्ण हैं, और उनका आत्म-सम्मान भी बढ़ा।

चैलेंजेस (Challenges)

ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई: छोटे बच्चों का ध्यान अधिक समय तक एक ही चीज़ पर नहीं रहता है, और कभी-कभी उन्हें किसी एक गतिविधि में संलग्न करना चुनौतीपूर्ण होता है।

व्यवहारिक समस्याएँ: बच्चों को अनुशासन सिखाना कठिन होता है, खासकर जब वे ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई महसूस करते हैं।



लर्निंग (Learning)

बच्चे स्कूल खुशी से आते हैं (Children Come to School Happily)

जब बच्चे खुशी-खुशी स्कूल आते हैं, तो यह मेरे लिए बड़ी सफलता है। बच्चों को स्कूल आने के लिए प्रेरित करने के लिए उन्हें मजेदार गतिविधियों में शामिल करना बहुत जरूरी है। जैसे रंगीन चित्र बनाना, खेल खेलना, और संगीत जैसी गतिविधियाँ उन्हें खुशी देती हैं।

जो सब्जेक्ट एक्साइटिंग नहीं है, उसे एक्साइटिंग बनाना (Making Unexciting Subjects Exciting)

कहानी के माध्यम से कठिन विषय समझाना: मैंने कठिन विषयों को कहानी के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे बच्चों को वे अधिक रुचिकर लगे।

संगीत और रचनात्मकता: बच्चों के लिए संगीत और कविता के माध्यम से विषयों को समझाना।

प्री-स्कूल बच्चों के साथ काम करते समय बहुत सारी चुनौतियाँ आती हैं, लेकिन जब आप उन्हें सही तरीके से सिखाते हैं और प्यार देते हैं, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। यह अनुभव बहुत ही खास था, क्योंकि बच्चों की मासूमियत और खुशी हर दिन को नया और प्रेरणादायक बना देती है।

बच्चों का सामाजिक संबंध समझना (Understanding Social Connections)

इस महीने हमने बच्चों को "लोगों से जुड़ने" की अहमियत सिखाई। हमने उन्हें बताया कि शिक्षा सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनके आत्मविश्वास, व्यवहार और जीवन के विभिन्न पहलुओं को आकार देती है। बच्चों को यह समझने में मदद की कि वे न केवल अपने साथियों से, बल्कि बड़े लोगों और समुदाय से भी कैसे जुड़ सकते हैं।

आज बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ा है, वे खुलकर अपनी समस्याएँ, विचार और अनुभव साझा करते हैं। यह शिक्षा के असल उद्देश्य को दर्शाता है, जो सिर्फ ज्ञान देना नहीं बल्कि बच्चों को आत्मनिर्भर और मजबूत व्यक्तित्व बनाने में मदद करना है।

धन्यवाद (Thank You)

हम उन सभी लोगों का धन्यवाद करना चाहते हैं, जिन्होंने इस यात्रा में हमारी मदद की:

अनुप सर, आदिती दीदी, सौम्यजीत सर, सुमित सर, कृति दीदी, तमन्ना दीदी, और चिन्हारी गर्ल्स।

आपकी मदद और समर्थन के बिना यह अनुभव इतना खास नहीं बन पाता।





Nurturing dream preserving roots & Home of creativity

Sumit varma

For me Hamar Srijan Shala is more than just a school; in a small span of time, it has become a place of hope for families dreaming of a brighter future for their children. It nurtures not only success but also values, ensuring they stay connected to their roots.

Seeing the children arrive each day, their eyes are filled with curiosity and excitement fills me with emotion. Their eagerness to learn is a reminder of the transformative power of education.

I dream of expanding Hamar Srijan Shala to more villages, bringing knowledge and opportunity to every child, shaping a future where learning knows no boundaries.

Anup

Chinhari Srijan Shala-s (Home of Creativity) are small attempts at attending to pre-school children's complex life worlds. Life worlds that are getting exposed to the wonders of the world. Life worlds that are developing a grasp of the beauties of the world. Of joy. As also the surprises the world throws up. New plants. New animals. New insects. New words. New relationships. Relationships with neighbours. With classmates. With peers.

Relationships with rivers, forests and hills. As our living relatives. Children's pre-school years (4-6) are psychologically intense. It is torn between small hurts and big laughs. Small hurdles and big achievements.

Our Srijan Shala-s want to become psychologically sensitive spaces. Spaces of care and compassion. Cooperation, and not competition. Where students are not getting educated. They are learning. They are learning to learn. From the world. From the world of experience. In rural contexts. In forest based societies.

Our Srijan Shala-s are not looking for the best student. We are looking for the best in the student.

Our Srijan Shalas are not schools. They are "homes". We want them to become little homes for the little hearts.





A New Space

Aditi

Rethinking the ideas of Schooling- To begin at the beginning

Schools bring forth an image of a space with children and adults. Structured ideas, walled classroom, age based groups, assessments and evaluations, competition and hierarchy. Hierarchy of ideas, of voices. A top-down space where 'what needs to be done' is predetermined.

Innovative and new ideas of schooling are not alien though. However, they are a prerogative for the affluent, more demanding, more aware, more educated and in many cases the more alienated elite. It is dominantly confined to the cities. It is assumed that only a certain set of children will benefit more from 'innovative' schools. They will be more suited to the new ideas. They will be able to imbibe it more, reciprocate more and eventually put this knowledge to good use. They will be the 'More Knowledgeable Other' in academic learning as other knowledges are slowly pushed into oblivion.

However, the schools and schooling, community and its knowledge, in the villages were our area of interest. Our belief was that we could re-think learning spaces in any context.

Before changes in practice, we had to change ourselves. We had to question our preexisting ideas; we had to question our preexisting contexts and practices. We had to question our assumptions of ourselves and of others. We had to question our assumptions of the capacities of others. Question the understanding of the 'more knowledgeable other'. Capacity building of children needed to be addressed at the very beginning and hence emerged the idea of focussing on the pre-schoolers. A nurturing, enriching, stimulating and respectful environment where the children were delighted to belong! Our intent was to engage with the preschoolers. To be mindful of their health, cognitive development, emotional well-being, social awareness and at the same time being respectful and aware of their cultural contexts and environment. This would perhaps enable us to take a small step towards building a community with the similar sense of responsibility towards oneself and the environment that we are in.

